प्रेम कुमार मणि

एक लोकगीत

पौराणिक कथाएँ दिलचस्प और खूबसूरत किस्सों से भरी हैं। रामायण और महाभारत कहानियों के खज़ाने हैं। इन कहानियों को राम लीला और कृष्ण लीला में खेला जाता है।

लेकिन यहाँ मैं तुम्हें इन पौराणिक पात्रों के साथ एक दूसरी ही दुनिया में ले जाना चाहता हूँ। यह दुनिया आम लोगों की है। गाँव-कस्बों तथा शहरों की बस्तियों में रहने वालों की है। इन लोगों ने इन महान काव्य ग्रंथों को शायद पढ़ा तो नहीं हो पर वे इनकी व्याख्या बहुत अच्छी करते हैं। इसके लिए तुम्हें विभिन्न बोलियों के लोकगीतों को देखना होगा। शिव, कृष्ण या राम को लेकर लोकगीत खूब मिलते हैं। इन्हें लिखा किसने है या तो पता नहीं लेकिन इन गीतों में छिपी बातें बहुत गहरा अर्थ रखती हैं। साथ ही आसानी से समझ भी आ जाती हैं। बड़े नाम वाले कवियों के काव्य ग्रंथ में बहुत-से विचार होते हैं। लेकिन आम लोगों के गीतों में करूणा होती है।

तुम्हें ऐसे ही एक लोकगीत के बारे में बताना चाहता हूँ। यह गीत पश्चिमी उत्तर प्रदेश और मध्यप्रदेश के कुछ हिस्सों में गाया जाता है।

बरही (हरिणी सन्दर्भ)

छापक बेड़ छिउलिया त पतवन घन बन हो,
रामा, तेहिं तर ठाढ़ि हरिनिया तौ मन अति अनमन हो।
चरतइ चरत हरिनवा तौ हरिनी से पूछइ हो,
हरिनी, की तोरे चरहा झुराने कि पानी बिन मुरझिउँ हो।
नाहीं मोरे चरहा झुराने, न पानी बिन मुरझिउँ हो,
हरिना! आजु हवै राजा के बरहिया तुहइँ मारि डइहइँ हो।
मचियही बइठी कउसिल्या त हरिनी अरज करइ हो,
रानी! मँसवा तौ सिझइ रसोइयाँ, खलरिया हमें देतिउ हो।
पेड़वा में टंगबइ खलरिया, मनइ समझइबइ हो,
रानी! नित उठि दरसन करबइ मनउ हरिना जीतइँ हो।
जाहु हरिनि घर अपने, खलरिया नाहीं देबइ हो,
हरिनी! खलरी के खँझड़ी मढ़उबइ तौ राम मोरा खेलिहइँ हो।
जब-जब बाजइ खँझड़िया, सबद सुनि अनकइ हो,
रामा, ठाढ़ि देखुलिया के निचवा तौ हरिनी बिसूरइ,
मनहिं मन सोचइ हो।

राम कथा के कई रूप हमें पता हैं। लेकिन यह गीत एक नया ही रूप हमारे सामने लाता है। पत्तों से गद-बद एक घने पेड़ के नीचे हिरणी अनमनी, उदास खड़ी है। पास ही उसका पति हिरण घास चर रहा है। हिरणी को उदास देखकर हिरण पूछता है कि तुम्हारा चेहरा मुरझाया क्यों है? लगता है तुम्हें पानी की ज़रूरत है। हिरणी कहती है कि नहीं, मैं पानी बिना मुरझा नहीं रही हूँ। मेरी चिन्ता दूसरी है। आज राजा के घर बेटे की बरही (जन्मोत्सव) है। आज तुम्हें मार कर लोग तुम्हारा माँस पकाएँगे।

गीत में एक दूसरा दृश्य आता है। हिरणी माता कौशल्या (राम की माँ) के पास पहुँचती है। कौशल्या मचिया पर बैठी हैं। हिरणी जानती है कि हिरण को छोड़ने की बात तो वे मानेंगी ही नहीं। इसकी प्रार्थना करने का कोई मतलब नहीं है। हिरणी कहती है – ठीक है मेरे पति का माँस आप बना लेना। लेकिन उसकी खाल मुझे दे देना। मैं पेड़ पर उस खाल को टाँग दूँगी। रोज़ उठकर उसे देखूँगी और अपने मन में हिरण को जीवित रखूँगी।

रानी जवाब देती है – जाओ-जाओ घर जाओ, खाल नहीं दूँगी। उस खाल से खंजड़ी मढ़वाऊँगी। उससे मेरे राम खेलेंगे। हिरणी की बिनती नहीं स्वीकारी जाती। हिरण की खाल से खंजड़ी मढ़ी जाती है।

आखिर की पक्तियाँ किसी के भी मन को छू लेंगी – जब-जब खंजड़ी बजती है उसे सुनकर हिरणी उदास-अनमनी हो जाती है। इसी पेड़ के नीचे बिसूरती (रोती) मन ही मन कुछ सोचती है।

हिरणी क्या सोचती है? यह एक सवाल बनकर हमारे दिल दिमाग में उभरता है और हमें भावुक बना देता है।

माता कौशल्या रानी हैं, उनका बेटा राजकुमार है। हिरणी और उसका पति तो आम नागरिक की तरह हैं। कितना कुछ नहीं कहता यह लोकगीत।

विनोद कुमार शुक्ल की लम्बी कहानी ''हरी घास की छप्पर वाली झोपड़ी और बौना पहाड़'' की 13 किस्तें चकमक में तुम पढ़ चुके हो। यह कहानी अभी खत्म नहीं हुई है। इसे तुम आगे कैसे पढ़ पाओगे इसके बारे में हम चकमक के फरवरी अंक में बताएँगे।

-चकमक

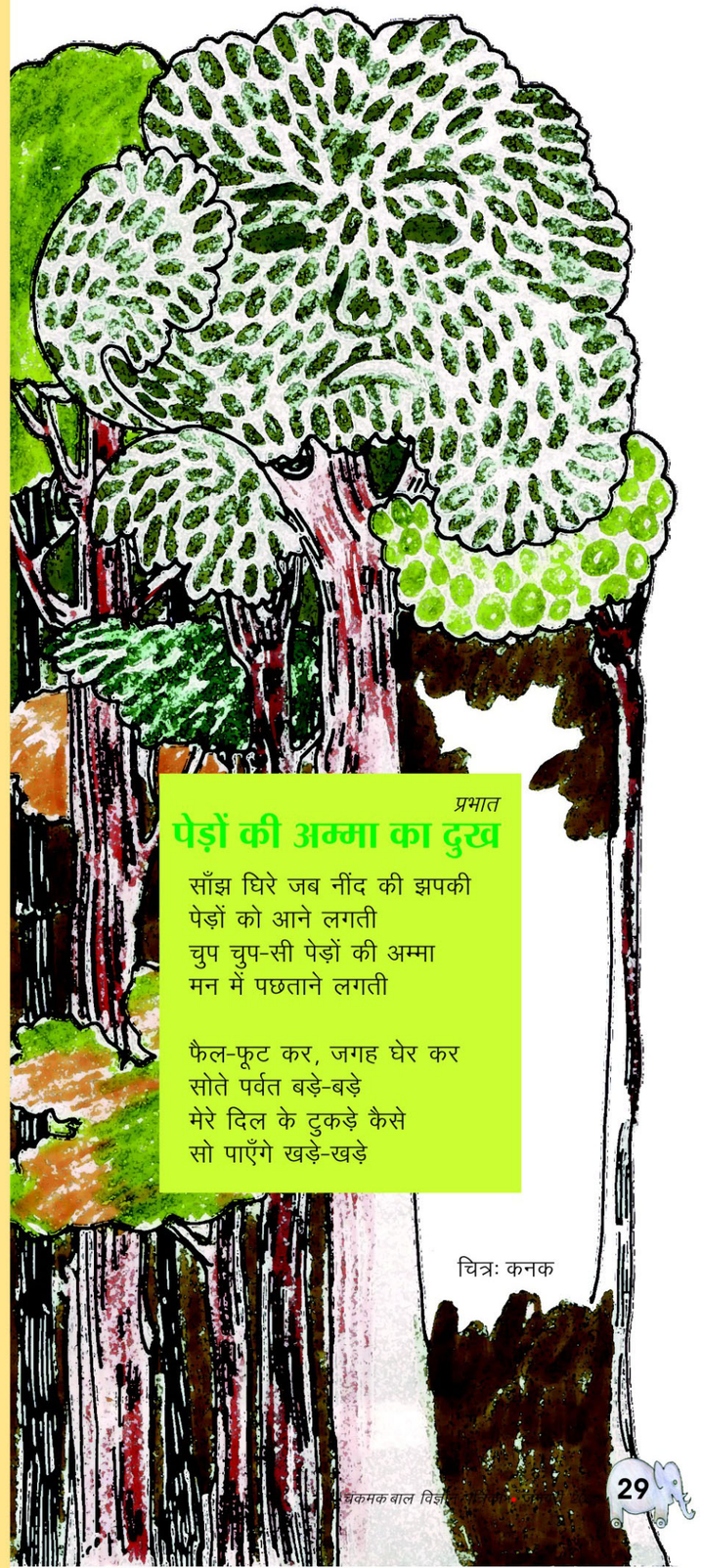

प्रभात

पेड़ों की अम्मा का दुख

साँझ घिरे जब नींद की झपकी
पेड़ों को आने लगती
चुप चुप-सी पेड़ों की अम्मा
मन में पछताने लगती

फैल-फूट कर, जगह घेर कर
सोते पर्वत बड़े-बड़े
मेरे दिल के टुकड़े कैसे
सो पाएँगे खड़े-खड़े

चित्रः कनक